मेरुरत्न-उपाध्याय-शिष्य-कृत

पांडवचरित्र-बालावबोध

जैन परंपरा प्रमाणेनी महाभारतकथा के पांडवचरित्र विषयक आ जूनी गुजराती भाषामां रचेल बालावबोधनी, सद्गत मुनि जिनविजयजीनी पासेथी मळेली एक मात्र हस्तप्रतने आधारे अहीं आपेलो पाठ तैयार कर्यो छे.

हस्तप्रतमां कुल ९० पत्र छे. पाठ अधूरो छे. जरासंधवध अने पछीना नेमिचरित्रना, नेमिनाथे कृष्णनुं मन राखवा अनिच्छाए विवाह करवानुं स्वीकार्युं छे एवी आकाशवाणी - एटला अंश पछी प्रतनुं लखाण अटक्युं छे. पुष्पिका पण नथी. एटले कर्ता, लेखन-संवत, लेखनस्थान वगेरेनो निर्देश पण नथी. प्रतनी प्रतिलिपि अधूरी ज छोडी देवाई छे.

प्रत झीणा अक्षरे स्पष्टपणे लखाई छे. अशुद्धिओ ओछी छे. कोईक शब्द चूकी जवायो छे. कोईक कोईक पंक्ति पण. अनुनासिक, ह्रस्वदीर्घ, सकार-शकार वगेरेना लेखन बाबत केटलीक असंगति छे, जे बीजी जूनी गुजराती हस्तप्रतोमां जेटली मळे छे तेना प्रमाणमां ठीकठीक ओछी छे. केटलीक देखीती भूलो सुधारी लीधी छे. अर्थ के पाठ अस्पष्ट के शंकास्पद लाग्यो छे त्यां ए शब्द के पंक्तिनी पासे प्रश्नार्थ मूक्यो छे. पत्रदीठ २३थी २५ पंक्ति अने पंक्तिदीठ ६६ थी ७५ अक्षरो छे. लखाणनुं कुल माप केटलुं छे तेनो अंदाज सहजपणे आपी शकाय तेम नथी, केम के कृतिनो अमुक अंश गद्यमां ('बोली'मां), अने अमुक अंश पद्यमां (मुख्यत्वे दुहा, चोपाई) एम उत्तरोत्तर चाले छे, अने लहियाए आपेल क्रमांक माटे गद्यांशना एकमनो शो आधार छे ते सहेजे नक्की थई शके तेम नथी. परंतु प्रतनुं लखाण ज्यां अटक्युं छे, त्यां सुधी (आगळ आवी गयेला ५६००ना आंकडा पछी १थी शरू करीने १६ सुधीना क्रमांक मळे छे तेथी) ५६१६नी संख्या थाय छे.

पांडवकौरव-सेना युद्ध माटे सज्ज थई सामसामे आवी रही अने रणवाद्योनो कोलाहल थयो त्यां सुधीनी कथा पछी ७१मा पत्रना पहेला पृष्ठ पर, चालु वर्णन वच्चे नोंध मूकेली छे. लहियाए आपेला क्रमांक ४७८१ पछीनी पहेली बे पंक्ति पछी नीचे प्रमाणे छे :

जइ किमइ वाग् वाणी सरस्वती तूसइ, वली विदुर-शिरोमणि पंडित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरुरत्न तणां पद-कमल तूसइं तु कुरव-पांडव-तणा युद्ध-तणी लव-लेश-मात्र संखेपि वर्णना कीजइ । (४७) (३)

वागुवांणि पय लागी वींनवुं, जोडि बेउ नांमी सिरु नमुं ।

देहि माइ मझ वांणी निरमली, कवित एह करिवा मझ मनि रुली ॥ (४७) (४)

मेरुरत्न-गुरु-ने पगि लागुं, कवित एह करिवा मति मागुं ।

झूझ-नी परि जिसी हुं जांणुं, माहरी गति-लगइ सु वखांणुं ॥ (४७) (५)

उत्तरकुमार विजय करीने विराटनगरमां पाछो आवे छे त्यारे तेना पिता तेना शौर्यनी प्रशंसा करे छे. तेना प्रत्युत्तरमा; उत्तर जणावे छे के ए पराक्रम बृहन्नलानुं छे. ते पछी पत्र ७०ना पाछळना पृष्ठ उपर लहियाए आपेला क्रमांक ४१ पछी नीचे प्रमाणे कर्ताविषयक नोंध छे :

छंद घटा

सरसति-सामिणि माइ पाय-पणांम भाविहि किज्जइए ।
मागेसु निरमल वांणि अविरल तीह लाहू लिज्जइए ।
जइ किमइ तूसइ माइ सरसइ ऊपजइ तिसु मइ घणी
नरवर-सु-पांडु-नरिंद-नंदण-गुण-सुवन्नण रढ घणी ॥
चंद्रगछ-राउ स तवह पक्खह नांमि कुमइ पणासइए ।
सांमली सरसइ विरुदु वहइ वांणि सुमइ उल्हासइए।
पउम जिम वयण-विकास अणुदिणु अहिणवा गुरु गोअमं
गुण भूरि सिरि जयचंद-सूरि गुरु जोडि कर नितु पय नमुं
तस सीस मांमट-साह-नंदण कवण जगि तस उप्पमं ।
सीलवइ-नींनादेवि-उरि सरि रायहंस अणोवमं ।
सोभाग-सुंदर जगह मणहर वांणि-अमीअ सु जलहरं
गुणि सीलि निम्मल कंति-जलहर मेररयण-मुणीसरं

(पाठां० मुणिवरं)

वर विणय लावण कला बुहुतरि सयल सुय परमाणयं ।
एगार अंग सु चऊद पूरव तत्त नवह वखाणयं
वादीअ-विहंडण-मांण विज्जा-सयल-परम-निहांणयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्याकरण-लक्खण-छंद-गुण अहिंनाण-केवल नांणयं ॥
रोहिणीअ-वर आसोअ-पुण्णिम-मयंक जिम मुह सोहइए
वक्खांणि वांणि सुदेसणा-रसि सविअ-जण-मण मोहइए ।
निग्गोअ-नरय-विआर चउविहि धंम्म-भेय सवि जांणइए ॥
मय-गव्व-कोहकसाय-लोह रिआसना नवि आंणइए
जय मुहि हुइं लख जीह जीह जीह लख वागेसरि
वागेसरि सवि मणह भावि जस, दिइं तूसी वर ।
सागर कोडाकोडि जगिहि जगि जे नर जीवइ
नवि आहार निहार जास नर नींद्र न आवइ ।
सिद्ध जिम पउम-आसणि रहइ
केवलि लबधि स ऊजमिहि ।
इम भणइ वनु सवि मेरयण-गुण
सोई नर वंण्णवि नवि सकहि
जय मुणिवर मेरयण तूसइं
तु सवि कला लहुं लीला सहि

भाषा, शैली वगेरेनुं स्वरुप जोतां १५मी सदीनो अंतभाग रचनासमय तरीके लई शकाय. आ बालावबोधनो कृष्णजन्मथी कंसवध सुधीनो खंड (पत्र १०ख थी १५ख) में संपादित करेल कीकु वसहीकृत 'कृष्ण-बालचरित्र' (१९९२)मां परिशिष्ट रूपे (पृ. ६२) प्रकाशित कर्यो छे.

❀

ओं नमः श्री नेमिनाथाय ।

गिरनार-गिरिशृंगे नमः(?नत्वा) श्रीनेमिनं जिनम् ।
स्नानं गजपतेः कुंडे कृत्वा पापः प्रमुच्यते ॥

(कुरुवंश)

कासमीर-पुर-मंडणी पणमीअ सरसइ-पाउ ।
गुण गाएवा पांडु-सुअ मझ मनि लागु ढाउ ॥
पहिलुं अवझाउर-नयर आदिनाह तिह राउ ।
मुरदेवि-नंदण नाभि-सुअ पणमइं सुर नर पाउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमेसरिम-सुह मेल्हि करि अंगीकरिउं चारित्र ।
राजि ठवीअ भरहेस भड अनु अनुक्रमि सु पुत्र ॥
विहिचीअ दिन्हा देस सु जेह जिसा पोसाइ ।
भरह-खंड नामिइं भरह तिहुयणि इम पभणाइ ॥
कुरुराजा कुरुखित्ति हूअ मोटउ मही-नरिंदु ।
सग्गि मृत्यि पायालि पुरि जाणइं इंद-फुणिंद ॥ ५
तिणि संतांनि अनेक निव अवतरीआ कुरु-देसि ।
हत्थि-नामि हथिणाउरह सुरवर-तणइ निवेसि ॥
संति कुंथु अरनाथ जिण हथिणाउरि अवतार ।
धम्म-चक्कवय चक्कवइ जिण-पय नितु जोहार ॥

(शांतनु-वृत्तांत)

वलि तिहां राजा सोम हूअ सोम-वंस सुपमांण ।
अतिबल पूठिइं अवतरिउ स्यांतन-राउ सुजांण ॥
हथिनाउरि वलि अवतरिउ सबल स्यांतन-राउ ।
सोम-वंश-कुल-मंडणु अरि-सिरि रोपइ पाउ ॥
धम्मवंत धुरि तेह तु निंम्मल-कुलि निकलंक ।
पूअ-भव-पसाउलइ थिउ पय पय सकलंक ॥ १०
वद्यण विलागुं पापमइ नितु आहेडइ जाइ ।
निरपराध मृग मारतु कांणि किसी न कराइ ॥
धम्मि धांमइ धूसट पडइ विरलु जाइ कि वार ।
-ण दोइ लिग्नि लगाडतु पणि किवार दस-बार ॥
एक दिवस उत्तावलुं पल्लांणीउ पवंग ।
गयु महावनि इक्कलु पिक्खवि जूथ कुरंग ॥
भुइं छांडी मृगलीं मृगिइं बलवइ चूकु बांण ॥
वल्लीअ-वणि मृगलां गयां विहि-वस-तणइ विनांणि ।
विलख-वयण राजा हूउ गयु आगेरइ ठांणि ॥ १५
पिक्खवि वण रुलीआंमणुं नंदण-वण-समतुल्ल ।
विलसइं फलि फलिआ तरु महमहंति अइ-फुल्ल ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोइलि करइं टहूकडा भमर करइं झणकार ।
जांणे वसंत अवतरिउ कि मलय-गिरि अवतार ॥
तिहां रिसहेसर-जिण-भूअण अइ मणहर उत्तंग ।
डंड-कलस सोवंण्णमइ बिंब रयणमइ जंग ॥
आदेसर जोहारि करि सुंदर सइतु थाइ ।
दीठु एक अवास वलि तिणि राजेसर जाइ ॥
घोडउ बंधिउ बारणइ नरवइ माहि पयट्ठ ।
भुइं छट्ठी गिउ सातमी कुमरी-विंद तिं दिट्ठ ॥ २०

(गंगा-वृत्तांत)

भमर-पलंगह ऊतरी कुमरि एक कर जोडि ।
जांणे किरि जगि त्रीय-रयण नयणि न दिसइं जोडि ॥
विनु विवेकिहि साचवइ रा रुलीयाइति थाइ ।
ओलखांण-विणु तस चरिय वात हिअइ न समाइ ॥
पूछीअ कहि सुंदरि किसिउं एवड विणउ करंति ।
ओलखांण नवि आज द्यु(?) हुं परि न परीछंति ॥
ऊठी एक सखी कहइ सांमी सांभलि वात ।
वेयड्ढ-गिरि सुरयण-पुरि जंण्ह-राउ इह-तात ॥
जोवण-भरि पुहुती जिमइ बइठी पीअ-उच्छंगि ।
बुल्लवी बहु-नेह भरि राइहिं मन-नइ रंगि ॥ २५
कहि-न वत्सि तू कुण गमइ मण-वंछिअ भरतार ।
परणावीअ बहु रिद्धि दिउं हय गय घण परिवार ॥
कर जोडी कंन्या कहइ वर नत्थी अम(?म्ह)ह रेसि ।
कहिउं करइ न जि माहरुं ते वर मइं मन देसि ॥
पूछिया राइहिं राय-सुअ कही कुमारि-नी वत्त ।
कोइ न परणइ ए कुमरि रा रंणु राउत्त ॥
निवरुं जांणी एह वण ईहां रचिया आवास ।
कारीअ आदेसर-भूअण आदेसरह [illegible]ास ॥
हव ए कुमरि ईहां रहइ करइ निरंतर पुंण्य । ३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणि जे को वर परणिसिइ तो हुं जांणुं धन्य ॥
इणि संसारि न एह समी कंन्या इसी सुचंग ।
गुण करणी निंम्मल सुमइ गरूउं नाम सुगंग ॥
बीजा त्रीजा टी(दी?)हडा ईहां पधारइं राउ ।
बोलावइं एह कुमरि-नइं संभालइ वण-ठाउ ॥
ईहां राजन आविउ हतु साथिइ इक नेमित्त ।
तिणि कंन्या देखी करी संभाली इक वत्त ॥
मणिहिं खेउ राजन म धरि म करिसि कय संताप ।
पुंण्य-उदय इह आवीआं गलीअ गयां सवि पाप ॥
इम कहतां तिणि महावणि मलपंता मातंग ।
आविया घण घंटा-रवि बहु पाखरिया पवंग ॥ ३५
रहवर हथीआरहं भरिया निर पायल असवार ।
जांणे किरि चक्कवइ-दल कोई न लाभइं पार ॥
इम करतां वेअड्ढ-गिरि पहुतु राजा जंन्ह ।
हरखिउ देखीय सेण बहु कुरुवइ रा-स्यां तंन्न ॥
राजा-स्यांतन भणइ हरिषिइं करु विवाह ।*
जे तम्ह मनि छइ ते वचन तिणि मझ दक्षिणा बाह ॥
जइ लोपुं वाचा किमइ तु मझ एह ज डंड ।
अवगिणि जिउ(?)उ गंगा सुमइ बुल्लइ इम बलवंड ॥
मंडलीअ मंडलीअ मिलि वेअड्ढ-गिरि-सनाह ।
वडइ महोत्सवि तिंहा कीउ गंगा-तणउ विवाह ॥ ४०
रा पुहुत्तु पुरि आपणइ सरिसी राणी गंग ।
हथणाउरि पुरि पाटणि उत्सव हूआ अति चंग ॥
जं गंगा-रांणी कहइ तं तं राउ करंति ।
वाच न चूकइं गंग-वर कहिउं स ते पालंति ॥
गंगा गंगावर-सरिस सुह भोगवइ समान ।
पुण्य-पसाइहिं केतले दिणि उपनुं ओधांन ॥

*आ पंक्ति अने पछीनी पंक्ति हांसियामां उमेरेली छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोत्य मणि मं(?) डोहला करइ स गंगादेवि ।
जांणइ गंगा-तडि जई मुणिवर-पय पणमेवि ॥
गयवरि चडि रयह सरिस गयपुरि-चेत्रप्रवाडि ।
जिणहरि जिण-पूजा करुं पूरुं मणह रहाडि ॥ ४५
संति-कुंथु-अर-भूअणि जई रमुं ति रस-विलास ।
अभय-दांण दीजइ जगिहि तु पूरइं सवि आस ॥
सुहिणंतर साचा लहइ जाणइ मण-नइ रंगि ।
सीह-तणुं बाचडुं सींह देखइ नीअ उच्छंगि ॥
मेरह ऊपरि महि करुं छत्र-तणइ आकारि ।
जई (१क)राजेसर वीनविउ प्रीअ वीनती अवधारि ॥
मणह रंगि राजा भणइ संभलि देवि सुवत्त ।
कु संति-कुंथु-कुल-मंडणु तउं जनमेसि सुपुत्त ॥
धम्मवंत गुणवंत अति रूपवंत सुविशाल ।
बलवत्तर सूरु सधर चउपट मल चउसाल ॥ ५०

(गांगेय - वृत्तांत)

नवइ मास अपरांति नव दिण रयणी अद्धेउ ।
सहसकिरण जिम उदय-गिरि तिम जनमिउ गांगेउ ॥
दीवा सवि नित्तेज गिया बालक-केरुं तेउ ।
सोल-कलाधर भालीयलि सोहइ सिरि गांगेउ ॥
घरि घरि गूडीअ ऊछलीअ तोरण वंदरवालि ।
घिइं ऊंबर घण सीचीअइं माणिणि-तणइ झमालि ॥
दीजइं दांण अणेग परि कणय रयण मणि अंण्ण ।
जे उत्सव गांगेय-जनमि कहि ते जांणइ कुंण ॥ ५४

चउपइ

हथणाउरि जनमिउ गांगेउ उत्सव कही न जांणुं तेउ ।
केंद्रीउ-वृहस्पति थाइ ग्रह पंच भला ऊंचइ ठाइ ॥
जिणि थानकि गुरु तीणइं राहु राजा भणइ करउ उत्साहु ।
जे जोसी जांणइं सुअ-भेउ नांम परठिउं तेहें गांगेउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलपतरु जिम वाधइ कुमर कय जिम बीज-चंद कय अमर ।
गांगेय-तणा गुण निम्मला दिणि दिणि जास चडंती कला ॥
वलि कित्तावा(१)सुरपुरि गया राइ अहेडी बोलाविया ।
ते आविया किहि ले कूतिरा रिमिझिमंति पाए घूघरा ॥ ५८

हवं बोली

स्यांतन-राजा-तणइ राजि राजा-तणइ आदेसि गजेंद्र गुडीअइं छइं ।
एक मयगला मद्यपान करावी करावी मदोन्मत्त कीजइं छइं ॥
तुरंगम पाखरीअइ छंइ। एकि तुखार-तणी खुरी लोह-पात्रि जडावीअइं छइं ।
अनेक महारथ सज कीजइं छइं। ते(हिं) भिंडमाल-प्रमुख आउध भरावीअइं छइं ॥
कुंण कुंण आउध ? भलां भिंडमाल, एकाधीआ करवाल ।
जम-तणी जिह्वा-तणी जिसी कटारी, काला कंकलोह-नी छुरी ॥
जिसिउ वीज-तणु झात्कार, तिसी तरूआरि ।
एक मुहर, जे थड(घड?) नींपजइ लोह-तणे भारि ॥
एकि बोलीअइं पट्य, जिसी केसर-स्यंघनी हुइं चपेट्य ।
कोदंड, धनुष, तीर, तर्क्कस, तोणीर, भाथा । षट्खंड पृथ्वी-तणा साधक खड्ग ॥
पाशु, परशु, फुरी, गोफण, जोड, कमांण, सब्बल, सांगि, सेल ।
कुंत, लकुट प्रमुख इसां छत्रीस डंडाउध ।.
तेहे रथ भरावीअइं छइं ।
इसी सजाई देखी देवी गंगा ससंभ्रांत हुई अछइ ।
ए एवडु आरंभ-संरंभ सिउ नीपजइ बरी(?) ॥
वइरी केऊं मलिया जांणीअइं नही ।
परच क्रागम-तणी वार्त्ता कह नही ।
अकस्मात ए गय-नइ किहां ऊपरि सजाई ?
इसिइ प्रस्तावि केइ एक प्रधान पुरुष राणी पूछवा लागी छइ ।
ते कहइं छइं, मात, सांभलुं वात । ए राजाधिराज महामंडलेश्वर ॥
एह-नइं बालापण पापरिद्धि-कर्म्म आखेटक-नउं व्यसन छइ ।
तम्ह परणियां पूठिइं एतला दिन वीसरी गिउं हतुं ।
कुणहिइं एकं व्याधि मृग-तणुं आमिष्य आंणी भेट कीधी हती ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते देखी करी वली आखेटक-नुं व्यसन सांभरिउं ।
ते एते आखेटक-नी सजाई हुइ छइ ।

चउपई

तं सांभलि गंगा-मनि दाहि ए तो मोटी मझ असमाहि ।
जं ए राउ आहेडु करइ दीधी वाच न ते मनि धरइ ॥
कर जोडी गंगा वींनवइ सांमी तुं मोटु महियवइ ।
आखेटक-नउ सिउ संताप जीव-तणु वध पहिलुं पाप ॥ ६०
जीवि वधारिइं जईअइ सर्ग्गि जीव वधिइं जाईअइ नर्ग्गि ।
जइ किरि माहरुं कहिउं करेसि तु आहेडइ मन जाएसि ॥
अपमांनी रंणी तिणि राइ ऊंमरडी आहेडइ जाइ ।
गंगा-देवि विमासइ वात कीधी राइ वचन मझ चात्र ॥
प्रकटिउं एह राय-नउं अभाग एव मझ रहिवा ईह न लाग ।
पुत्र लेई पीहरि जाएसु दांण शील तव पुंण्य करेसु ॥
गंगा चाली ले गांगेउ गईअ वेगि वेअड्ढ-गिरे उ ।
जुहारिउ जई आपणु बाप भागु मनह तणु संताप ॥
गंगा दान पुंण्य अति करइ विषय-सुख-वात न मनि धरइ ।
वाधइ कुमर तिहां गांगेउ मातुलि कन्हइ भणइ सवि भेउ ॥ ६५
पढइ गुणइ सवि ग्रंथ अपार जांण्या नव तत्त-ना विचार ।
स्मृति वेअ आगम सवि पुरांण छंद तर्क्क लक्खण सुप्रमांण ।
लखित पठित लग बहुतरि कला सीखी वलि करिवी करि तुला ।
खचर-कला विद्या-नी जगीस सरमइ दंडाउध छत्रीस ॥
जांणी विद्या बहुरूपिणी नाग-पास सीखी थंभणी ।
मंत्र अघोर नही जगि तेउ जे नवि लहइ कुमर गांगेउ ॥
स्वर्ग्गि मृत्यि त्रतइं जि पयालि ते जांणी विद्या तिणि कालि ।
देवि न दांणवि रंणे राइ गांगेउ किणि नवि छेतराइ ॥ ६९

वली बोली

गांगेउ कुमर अनेक विद्याधर-सिउ वाद-विवाद मांडइ । त्रिगि चाचरि चुवाटइ हींडइ । अनेकि राज-कुमर-तणां मन रंजवइ । पणि धर्म्म-नुं आगर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्वोपकार-करुण-दयामय-सागर ॥ जैन-धर्म्म-रक्त । एक मिथ्यात्व-ऊपरि विरक्त । सत्य वार्त्ता भाखइ । असत्य बोली न दाखइ ॥ धुरलगइ (१ख) स्यंघ-नां परि(?रा)क्रम । विद्या-कला-ऊपर उपक्रम ॥ जांण-वेता भरह-वेता सोभाग-सुंदर । जांणे किरि को-एक देव-नु कुमर ॥ देव-भगत, गुरु-भगत, संघ-भगत, माता-भगत, पिता-भगत ॥ पात्र कपटंतर जांणइ । धर्म्मवंत वखांणइ ॥ साधु प्रसंसइ । दुष्ट-रहइं सिख्या दिइ । छल-छदम न गमइं । जूइ न रमइं ॥ अखाद्य न खाइं । अपेउ न पीअइं ॥ स्त्री-संग न करइ । अहंकार न करइं ॥ पणि जेतलु केतलु अजुगति-नुं करणहार, कूड-कपट-नु धणी चोर-चरड, खूंट-खरड, सात व्यसन-नु सेवणहार, तेह-नइं सिख्या-दांन दिइ ॥ तिणि करी अनेक विद्याधरनां कुमर-नइं अणगमतु थिउ । महा-दुर्दांत किर विद्याधर-ना कुमर वैभाष्य बोलइं, गालि दिइं, अकुलीन कहइं । ए भूमि-गोचरु बोलीअइं जे(?जइ) सकुलीन हुइं ते मुंहसालि कांइं रहिसिइं ॥ इसी वार्त्ता सांभली सांसहइ नही । मुहकम माइ । सव-कहि रहइं दुर्ज्जेअ । तिणि करी गांगेउ-कुमर-ना ओलंभा आवइं । पुत्र-तणा उपालंभ गंगा सही न सकइं । ते उपालंभ बीहती पुत्र लेई करी पर्वत-थिकी ऊतरी तिणिई जि वन-खंडि आवी वास कीधु । गंगा-नइ गांगेउ-तणे गुणे करी संत साधु श्रावक लोक घणा वसिया । तिहां सदा चारण श्रमण-महात्मा आवइं । गरूई नगरी मंडांणी, चतुर्दस-योजन-भूमिका-प्रमांण । ते नगर-पाखलीआ गरूउं वन-खंड बोलीअइ । सदापल वृक्ष । कुर्बक तिलिक अशोक चंपक प्रियाल साल रसाल तमाल किरमाल । प्रियंग पतंग नाग पुन्नाग । नालीअरि केलि फोफलिणि खारिकी खजूरी करणी जंबीरी नारिंगी बीजुरी राजादन अखोड बादांम ताल अंब जंबु प्रमुख अनेक शाड्वल वृक्ष पुष्पित मुकुलित । सदा फल-फुल्लि करी ते वन-खंड विराजमांन, महा संशोभायमांन । पुष्पजाति वली राय-चंपक कणय-केतकी सुवर्ण्ण मालती सेत्र जाइ ढूंढणीआ वेअल कुंद मुकुरंद मुचकंद माकुंद तेहने परिमलि करी मघमघायमांन । वली सांमली सेलडी गूंडगिरी-तणा वाडा तेहे अक्ष-रस शर्क्करा-रस नीपजइं । किसिमि द्राक्षा-वल्ली नागवल्ली-तणा मंडप तेह-नी शोभा ॥

ते वन-खंड-माहि नदी-ना प्रवाह । चतुर्मुख महा मनोहर कुंड वापी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूप तडागि करी विराजमांन । ते नगरी पाखलीआ चउ-फेर चतुर्द्दश-योजन-प्रमांण महा-वन बोलीअइ । स्वापद जीव भयंकर नही । हिरण रोझ सूअर झंकार ससा सीआल सूकां त्रिणां-नी चारि-ना चरणहार ते जीव-नां यूथ बोलीअइं । तिहां गांगेउ-नइ भइ करी व्याध वागरी भील पुलिंद दुर्बली को पइसइ नही । तिणि करी ते अभयपुरी नगरी कहीअइ ।

वली चउपई

आखेटक-नु करि उत्साह पाटणि पुहुतु स्यांतन-राउ ।
गियां रंणी गंगा गांगेउ विखवादिउ मनि राउ असेउ ॥ ७०
जे राजनुं सार सा गंग ते पीहरि गइ ले सुअ चंग ।
तिणि संतापि राउ नवि जिमइ अवर विलास सुख नवि गमइ ॥
वात न गोठि करइ संलाप राति दिवस तेह जि संताप ।
इक वाचा चूकु हुं आज तीणि विणासिउं सघलुं काज ॥
इम नींगमियां वरस चउवीस हूउ वली राजा स-जगीस ।
आहेडा-नुं वसण न जाइ गयवर वली गुडाविया राइ ॥
गयवर गुडिया तुरी पाखरिया सवि राउत संनाहिइं वरिया ।
कूड-पास सवि ले समदाउ वली आहेडइ चालिउ राउ ॥
मारइ मृग्घ अहेडु करइ पाप-वसण क्षणु नवि वीसरइ ।
जे हूंतां वन-खंड अरांम हिरण-तणां नींठाडियां नांम ॥
एक दिवस नवि पांमइ मृग्घ तीणि करी अति हूउ विरग्ग ।
चिहु दिसि चर पाठवीआ राइ जई जोउ मृग छइ किणि ठाइ ॥
इकि आवी राजा वींनवइं संचलि राउ बहू मृग अछइं ।
इक वन-खंड न लाभइ पार हिरण जीव तिणि अछइं अपार ॥ ७७

वली बोली

इसी वार्त्ता सांभली राजा स्यांतन सहर्षित हूउ छइ । ते वन-खंड-भणी पवरसि(?) पूरी चतुरंगी सेना, लेई चालिउ छइ । जेहइं गांगेउ-ना वन-खंड-माहिला गमा संप्राप्त हूउ, मुहर-थिका व्याध वागरी हणि हणि मारि मारि करिवा लागा छइं । जे घोघर घूंनिरा कूतिरा ते मेल्हीअइं छइं । तेह-ने पडसद्दे बापडा मृगला मृगली भयभीत थिका तरल-लोचन पुलायन करिवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लागा छइं । केहे-ई एके कर्म्मकरि मजूरि आवी गांगेउ वीनविउ । अहो कुमर, एतला दिवस ए वन-खंड-माहिला गमा व्याध लब्धक वागरी अहेडी कूतिरा न दीसता, आज तेहे करी वन-खंड सघलुंअ-इ दक्षिण दिसिइ भरिउं पूरिउं दीसइ छइ, अनइ वली गज रथ तुरंगम पायक तेह-नुं पार नथी लाभतु । इसी वार्त्ता सांभली गांगेउ-कुमर भृकटी-भीषण हूउ छइ । दिव्यमइ रथ एक सज करी छत्री डंडाउध भरी पूरी एकांग वर वीर-चालिउ छइ । स्यांतन राजा-नी सेना माहि आविउ छइ । गांगेउ आवतु देखी जे राय-ना महा सुभट हूता ते सवे धसमसी पाछा आव्या । राइ स्यांतनि बोलाव्या । ते कहिवा लागा छइं । महाराज, महारथी एक आवइ छइ रथारूढ थिकु । पणि महा-शूर वीर पराक्रमी जिसिउ काल-कितांत हुइ । हिवडां (२क) नइ समइ तिसिउ दिसिवा लागु छइ, जिसिउ हेला-मात्र माहि कटक सघला-इनु कल्पांत करइ । वली आज्ञा देतु ज आवइ छइ । जि-को माहरइ इणि वन-खंडि माहरां पालियां-पोसियां मृगलां-प्रतिइं घाउ घालइ, तेह-नइं तम्हारा राय-नी आज्ञा छइ । कहतां वडी वार लागइ । गांगेउ आविउ-ई-जिा सेना सघलीअ-इ राय-परइ जइ पइठी । राजा मुहवडि हूउ छइ । वली गांगेउ कुमर कहइ छइ । अहो राजन, माहरां मृग-प्रतिइं घातु मा घालिसि । माहरु वन-खंड-माहि म पइसिसि । भइ, सांभलि जइ कहिउं नहीं करइ, तु हेलां-मात्र-माहि पांणी-ऊतार करिसु । राजा स्यांतन कहइ छइ । रे पतंग किटक-मात्र, हुं स्यांतन-राजा जइ दीठु न हतु तु बाते-इ नहतु सांभलिउ ? मइं संग्रामांगणि अनेकि राइ-राणां-तणा घर ऊंधां घालियां छइं । इसी वार्त्ता बोली राजा स्यांतनि कूंचि हाथ धालिउ छइ । मूंछ वल भरिवा लागु छइ । हाथि कोडंड लेई करी बांण परिठिउ । आर्ण्णके(?) पूरित । गांगेउ-कुमर-भणी बांण मूंकिउं । गांगेउ-नइ प्रतापि करी बांण डावउं जिमणुं वही गिउं । वली गांगेउ कहइ छइ । हास्य-वार्त्ता टाली माणस थई रहे । मेघाडंबर-छत्र-तणी अनइ छत्रधर-तणी रक्षा करे ॥

वली चउपई

गांगेउ बोलइ बलवंड करीयलि धरी धणह-कोडंड ।
गुण-नीं मज्झि परिठिउं बांण ऊभा रहिआ जोअइ रा रांण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवइ बांण अपर कुण मात्र खडहडि पडिउ छत्रधर छात्र ।
बीजइ बांणि विद्या थंभणी मेल्हिउं सक्ल्ह-सेन-भड-भणी ॥
नवि लागइ नवि को मारंति भड थंभ्या टगमग जोअंति ।
क्षिप्र बांण मेल्हिउं वलि कूंअरि गई वीणि सब-कहि हुई कुपरि ८०
रिणि रेसग्गल थिउ गांगेउ ते जांणिउं गंगा सहु भेउ ।
वेगि वेगि पुहुती तिणि ठाइ आवंती दीठी कुरि राइ ॥
तिणि आवती जुहारिउ राउ सांमी तम्ह हम नवि जसवाउ ।
ए तम्ह पुत्र कुमर गांगेउ गंगादेविहि भागु भेउ ॥
वली कुमर-तडि गंगा गई ए ताहरु पिता सुणि भई ।
इम संभलि आणंदिहि चडिउ लोटींगणे ताउ पय पडिउ ॥
आंणंदिउ राजा स्यांतन्न दिट्ठु गंग गंगा-नुं वचंन्न ।
गांगेउ आघु लहीअइ सिघ्र बलिइ सुअ साइं दीअइ ॥
आपणपुं धन वन मंनिइ माहरइ सुकुमर गांगेउ ।
गांगेवि दिठइ सवि .....॥ ८५
आंम तात तु मोटु राउ ताहरु त्रिहु भूअणे भडिवाउ ।
आज पछु ए परि मन करेसि खड खाता मृगला मन हणेसि ॥
सेन-सहित सहु गयउं अवासि भोजन-भगति हुइं तस-पासि ।
गंगा-नइ कुमरि गांगेइ अमीय-वयणि रा पडिबोहिइ ॥
बार-वरस-नी एतइ सींम आखेटक लिवराविउ नींम ।
राइ उत्संगिहि ले गांगेउ मंन्नाविउ अति परिइं करेउ ॥
मांनइ नहीं स गंगा-देवि पुत्त मोकलिउ माइहि खेवि ।
हथणाउरि स पुहुतु राउ गांगेउ-नु जगि जसवाउ ॥

वली बोली

राइ स्यांतनि गांगेउ-नां गरूआं चरित्र जांणी करी गांगेउ-प्रतिइं युवराज-पदवी दीधी । गांगेउ-कुमर राज-नी च्यंता सघलीअ-इ करइ । साधु पालइ, दुष्ट निग्रहइ । पणि रात्रि-दिवस बाप-नी भगति करइ । आगे-ई जिम श्री रामचंदि नइ लक्ष्मणि कीधी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वली चउपई

(सत्यवती - प्रसंग)

एक दिवस वलि स्यांतन-राउ तिहां गयु जिहां जमणा-ठाउ ।
जमणा-तडि दिठी इक कूंअरि रूपवंति बोलती चतुरि ॥ ९०
राइ कूंअरि बोलावी वली कवण-तणी धीअ कां एकली ।
कुमरि भणइ सांभलि मझ वात अछइ नावडु माहरु तात ॥
तीह-रइं धरम-तणु मनि भाव तस आदेसि वहावुं नाव ।
विसु पायकु लीजइ नहीं सत्यवती हुं नांमिइं सही ॥ ९२

वली बोली

ईसी वार्त्ता सांभली सत्यवती-नुं रूप देखी करी राजा अनुराग-चित्त हूउ छइ । जइ पोतइ भाग्य हुइ तु ए कंन्या-नुं पांणि-ग्रहण करुं । ते नावडा बेडी-वाहा-नुं घर-मंदिर पूछी बेडी-वाडा-नइ घरि गिउ छइ । बेडी-वाहु सांम्हु ऊठिउ । प्रणांम नींपजाविउ । आसण-बइसण मांडियां । राजा बइठु । नावडु-नावडी हाथ जोडी ऊभां रहियां कहइं छइं स्वांमिन, ए कुण वार्त्ता ? करीर-नइ गृहांगणि कल्प-वृक्ष आविउ ?

वली चउपई

राजा भणइ सुणु तम्हि वात माहरां वचन म करिसिउ चात्र ।
धीअ तम्हारी दीठी अम्हे ते मझ घरि परणावु तम्हे ॥
राय-पाइ बेई जण पडी भणइ नावडु नइ नावडी ।
सालि दालि घी जे आहरइं खल-नी साद्र कांइ ने करइं ?॥
जे वइसइं पूठि-नी पवंग तींह नर राखिभ-सिउं कुण रंग ? ।
जींह-नइ घरि गंग गोरडी ते नर नवि परणइं नावडी ॥ ९५
जइ अति आदर करिसिउ तम्हे तम्ह दीकरी न देसिउं अम्हे ।
जइ कि-वार ए तम्ह घर वासि विषइ-सुख भोगवइ विलासि ॥
जे एह-नइ पुत्र जनमीअइं तम्ह पूठिइं ते राजि न थीअइं ।
गांगेउ राज-तणउ धणी ते बापडा रुलइं रेवणी ॥ ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वली बोली

तेना वडां-तणी वार्त्ता सांभली राजा स्यांतन विच्छाय हूउ छइ । मनइमाहि विमासिवा लागु छइ । ए बापडां साचीअ-इ जि वात कहइं छइं । (२ख) जींह-नइ गांगेउ सरीखु बेटु हुइ, तां बेडी-वाहा-नी बेटीनां बेटां-नइं राज न हुइं । मोटा राय-ना बेटा नीच कर्म्म करता लाजइं । एक माहरुं मुहत जाइ । बीजुं तीह-नुं इ मुहत जाइ । एह कारण इह-नइं लाभ कांई न हुइ । राजा कालुं मुह करी पाछु वलिउ ।

श्लोक

वन-कुसुमं कृपण-श्रीं कूपच्छाया सरंग धूली च (?) ।
एतानि विलयं यान्ति भाग्यहीन-मनोरथाः ॥ ९८

स्याम-वर्ण्ण मुहि राजा वलिउ जांणे किरि सीकोतरि-छलिउ ।
बीजइ दिवसि सभां बइसेइ मषी-वर्ण्ण दीठु गांगेइ ॥
कय पर-चक्रागम थिउ अग्रलि लोपी आंण किणिहि सीमालि ।
अ-भगति कइ हूई माहरी कइ रांणी गंगा सांभरी ॥ १००
जां राय-नुं न लाभइं मंत्र तां मइं नवि करिवुं भोजंत्र ।
मंति अमायत पूछिया कुमरि जांणि वात सवे तिणि स-धरि ॥
गयु नावडां-तणइ अवासि करइ वींनती तीह बिहुं-पासि ।
भणइ नावडु नइ नावडी धीअ म मागिसि भइ अम्ह-तणि ॥
आगे अम्हि अणमांनिउ राउ हव तम्ह मागेवा नवि ठाउ ।
मन-नी वात सवे वलि कही रा दीकिरी न देसिउं सही ॥
वली वात सांभलि गांगेउ इक अकुलीणां अछुं अम्हे उ ।
जइ किवार राजसन पडइ किम कारेली सुर-तरी चडइ ॥
समरी-गलइ छाजइ नवि हार किम नावडी राउ भरतार ।
सावधांन सांभलि एतलुं झूझिया-पांहइ लूविउ भलुं ॥ १०५

वली बोली

नावडां-तणां वचन सांभली गांगेउ-कुमर कहइ छइं । भई सांभळि वात । जां कांई हुं माहरा बाप-नु मनोर्थ पूरी न सकुं, तां कांई मझ भोजन करिवा नीम । वली जे तम्हे वार्ता कहु छु, ते वात सघलीअ-इ साची ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणि एक वात माहरी साचीअ-इ जि सांभलु । जइ कि-वारं सत्यवती-नुं पांणि-ग्रहण राजा करइ, तु सत्यवती माहरइ साचीअ-इ जि माता । गंगा-पांहइं अधिक रात्रि-दिवस सेवा करिसु । वली सांभलु । जे सत्यवती-ना पुत्र हुसिइं ते माहरइ लुहडा-इ थिका राजा स्यांतन-पांहइं अधिक न गिणुं,तु मझ-रहइँ तात-हत्या । वली सांभलु । राजा स्यांतन-पूठिइं मझ-रइं राज्य-भार अंगीकरिवा नींम । सत्यवती-ना पुत्र रहइं मइं माहरइं हाथि-सिउं नींमि सहि राज देवुं । वली रात्रि-दिवस जिम राय-नी सेवा करुं छुं तिम सत्यवती-ना पुत्र-नी सेवा करिसु ।

वली सांभलु । जां कांई हुं जीविसु, तां मझ जीवता सत्यवती-ना पुत्र-रहइं को पराभवी नही सकइ, जइ बार चक्रवर्त्ति-नां दल आवइं तुह-इ । तम्हे सत्यवती माहरा बाप-नइं दिउ । एतली मझ-रहइं समाधि करु ।

जि-वारं इसी प्रतिज्ञा गांगेउ करइ छइ, ति-वारं गिगनांगणि वैमांनिक देवता रहिया जोअइं छइं । वली नावडु कहइ छइ । अहो गांगेउ-कुमर, सांभलि । जे वात तइं कीधी, ते सघलीअ-इ साची । कि-वार अजी द्रु चलइ, पणि ताहरी वाचा न चलइ । पणि एक अजी अम्हारा मनि वात छइ । ति-वारं गांगेउ कहइ छइ । जि-कांई मनि हुइ ते हिवडां कहे । नावडु कहइ, सांभलि ।

चउपई

एक वात सांभलि सतवंत जे कि-वि हुसिइं तम्हरा पुत्त ।
तम्ह जीवतां म्रिच्यादं रहइं तम्ह पूठिइं ते किम सांसहइं ? ॥
वलि गांगेउ कहइ सुणि वचन आज-आघी माहरइ स्त्री बहिन ।
वली कहुं सुणि बीजी वात आज-पछी स्त्री सवि मझ मात ॥
धन गांगेउ-कुमर संसारि इसिउ न बीजु को ब्रह्मचारि ।
चउथुं व्रत कुमरि आदरी रत्न-वृष्टि इंद्रिहिं सिरि करी ॥
कनक-वृष्टि सुर करइं ति खेवि कुसम-वृष्टि एकि करइं देव ।
रंभा पउमा गवरि विसाल सइं हथि कंठि ठवइ जइ-माल ॥
सावित्री सोवनमइ थाल भरि मोती मांणिक सुविसाल ।
रोहिणि शुची जि सुर-मानिनी वृद्धापनी करइं कामिनी ॥ १०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वली नावडु इणि परि भणइ ए मइं धीअ दीधी तम्ह तणइ ।
एह-नु सांभलि मूल-समंध सत्यवती-ना गुण छइ अनुंध ॥
भणइ नावडु अनइ. नावडी सत्यवती अम्हि लाधी पडी ।
एह अम्हारी नवि दीकिरि एह समी नवि सुर-सुंदरी ॥
अम्ह लिइ तां वांणी हुई अगासि वागु-वांणि-नुं वचन विमासि ।
नयर रतनपुर रा रतनसेन जयवंतु सहस-कि(?क)र जेम ॥
रतनावली रांणी तेह-नइ सोल कला ससि-मुहि जेह-नइ ।
सत्यवती सुणि तीह-नी कुमरि वयर-भावि लांखी किणि अमरि ॥
इणि वातं हरखिउ गांगेउ भलु कीउं भागु तम्हि भेउ ।
साची एह वात सवि खरी सीप अनइ गंगोदक-भरी ॥ ११०
सत्यवती तु रथि बइसारि गांगेउ आविउ पुर-मझारि ।
वडइ महोत्सवि कीउ विवाह परणिउ गयपुर-पाटण-नाह ॥
राजा स्यांतन चींतवइ ईणि मनोरथ पूरिया सव-इ ।
माहरइं काजि ब्रह्म-व्रत लीउं लोकोत्तरह काज इणि कीउं ॥
इणि मझ मन-नी भागी आधि इणि दीठइं माहरइ मनि समाधि ।
हुं एह-ना गुण किम छूटेउ जग-वंदनीक ए गांगेउ ॥
राजा सुख (३क) भोगवइ समाधि अपर किसी नवि छइ असमाधि ।
सत्यवतीं जनमि सत(?) पुत्त चित्रांगद तस नांम निरुत्त ॥
बीजु कुमर वली जनमीउ नांमिहि विचित्रवीर्य ते हूउ ।
सुख भोगवीअ अतिहि इह-लोकि स्यांतन-रा पुहुतु पर-लोकि ॥११५
चित्रांगद बइसारिउ पाटि गांगेइ तिलिक कीउं निलाटि ।
तात-तणि परि सेवा करइ काज-कांम सघलां आदरइ ॥
गांगेउ बिहु-नु उवझाय कला सीखविया ते जग-माहि ।
जिम जिम तनि पोढेरु भयु चित्रांगद जयवंतु हूउ ॥
कटकी-उपरि करइ अभ्यास लिइ लूसइ मारइ मइवास ।
चुपट दलि पर-भोमहि भमइ तिम तिम मनि गांगेउ गमइ ॥
इणि परि सयल लीयां पर-खंड अपर बीहता दिइं घण डंड ।
इक सीमाल न मांनइं आंण तस ऊपरि मांडिउं मंडाण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणि गांगेउ न जांणइ इसिउं चित्रांगद-मनि छइ जं जिसिउं ।
विणु पूछिया बांधव गांगेउ सकल सेन चालिउ तेउ ॥ १२०
रेवांचिइ(?) जई वींटिउ नगर तिहां नीलांगद राजा सधर ।
अंगोअंगि हूआ बिहु घाउ रिणिहि रहिउ चित्रांगद-राउ ॥
बांधव-तणइ वयरि गांगेउ चालिउ चउपट रथि बइसेउ ।
बोलाविउ नीलांगद-राउ झूझ-तणु रे करि समदाउ ॥
बेउ महा-भड रिणही चडिया रावण-राम तणी परि भिडिया ।
गांगेउ-सिउं लीधा घाउ रिणि रहिउ नीलांगद राउ ॥
लीधा मयगल सयल तुरंग लीधीअ लूसी आथि सपतंग ।
लोकां सविहुं दीधी धीर लेई देस- वलीउ वर वीर ॥
आविउ गयपुर-नयर-मझारि बांधव-तणुं दुक्ख अपारि ।
मृत्य-काज कीधां नवि घाटि विचित्रवीर्य बइसारिउ पाटि ॥ १२५
राति-दिवस सेवा नितु करइ सत्यवती नितु पय अणुसरइ ।
विचित्रवीर्य विवाहह रेसि चर मोकलिया चिहु दिसि देसि ॥
जे देखु कंन्या गुणवंति विनयवंति जे वलि रूपवंति ।
बलि छलि ते कंन्या आणेसु विचित्रवीर्य हुं परणावेसु ॥ १२७

(चालु)

❀

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरुरत्न-उपाध्याय-शिष्य-कृत

पांडवचरित्र-बालावबोध

('अनसंधान'-४, पृ. ८५ थी चालु)

(अंबा-अंबिका-अंबालिका-हरण)

विचित्रवीर्य-विवाहह रेसि चर मोकलिया चिहु दिसि देसि ॥ १२६

जे देखु कंन्या गुणवंति विनयवंति जे वलि रूपवंति ।

बलि छलि ते कंन्या आणेसुविचित्रवीर्य हुं परणावेसु ॥ १२७

(बोली)

इसइ प्रस्तावि एकि चर कासी-नगर-थिका आविया छइं । तेहे गांगेउ तणा पद कमल प्रणमी-नइ वार्ता कहइं छइं । सांमी, सांभलि कंन्या त्रिहुं-नी वार्ता । आव आव (?) अपसरा भांजी नइ अकेकी घडी छइ । कासीपुरी नगरी कासी-नरेश्वर राजा राज्य करइ । तेह-नइ कासीश्वरी पटरांणी । तेह-नइ त्रिण्णि कुमरि । त्रिण्ण-इ योवन संप्राप्त हूई छइं । तिणि कासी-नरेश्वरि विश्व माहिला गमा अनेकि राज-कुमर जोआव्या । पणि तीह-नी जांमलिइं वर कुण्हइ न मिलइं । ति-वार अम्हे इसिउं विमासिउं । ईहं त्रिहुं कंन्यानी जांमलिइ एक वर राजा विचित्रवीर्य छइ पणि बीजु वर नथी । ति-वारं गांगेइ कहिउं । ते कंन्या-नां नांम सियां ? चर कहइं छइं, सांभलु । वडी नांम अंबा, तेह लुहुडी-नुं नाम अंबिका, त्रीजी-नुं नांम अंबालिका । पणि देवां ही दुर्ल्लभ । वली गांगेउ कहइ छइ । एक वार मगावीअइं । जइ मागी दि तु लिइं । नहीतरि बलात्कारि लेई आविसु । चर वली कहइं छइं । सांमी, मागिवुं-तागिवुं रहिउ । अत कांइं सयंवरा-मंडप मंडाणुं छइ । महा-मनोहर सुवर्णमय रत्नमय पीठ । पित्तलामय रुप्यमय भीति । थांभा कूंभी सिरां पाट पीढ सुवर्ण्णमइ ऊपरि रत्न-कंबल वस्त्र तेहना उल्लोच । चंद्रोआनां मंडाण । ति-वार-पूठिइं मणि-मुक्ताफल-तणां झूंबिका । अनेकि किंकिणि-तणा झणत्कार । कोरणी-तणी वितिपिति । चित्रांमण-तणी विचित्राई । जल-यंत्र मंडाणा छइं । अनेकि मंचोन्मंच बंधाणा छइं । राय राणा मंडलीक प्रतिइं कुंकुम-पत्रिका मोकली छइं । राज-कुमर-नी कोटि मिली छइं । पणि जि काई आपणपा हूइ निउंनुं नथी । ते सत्य-नुं कारण भणी । काइं राजा विचित्रवीर्य बेडीवाहा-नी बेटी-नु बेटु । एत न मांन विचारीअइ छइ । सत्यवती-नु मूल संबंध न जांणइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गांगेउ कहइ छइ । पाधरुं आपणपा निउंतरुं नथी मोकलिउं ? तु जोए माहरा हाथ । तिम करुं जिम खातां नवि सरइं । ति वारं वली पइला कहइं छइं । स्वांमिन, लगन-आडा पांच दिन छइं । ति वात सांभली अनइ गांगेइ चर पहिरावियां । ऊठिउ गांगेउ । दिव्यमइ रथ एक सज कीधु । छत्रीस डंडाउध तेहे भरिउ पूरिउ । आपणपइं हाथि कोडंड धनुष लीधुं । तोला यमल भाला भाथा भीडिया । चालि कासी-पुरी-भणी ।

पांचमइ दिनि प्रभात-समइ गांगेउ रथि बइठु सयंवरा-मंडप-माहि पहुतु । राज-कुमर-ना लाख कोडि देखिवा लागु । आभरणि अलंकरणि परिवारि परवरिया । अनेकि सिंघासण मंचोन्मंचि बइठा नित्य प्रेक्षणीक करावइं छइं । इसि प्रस्तावि कासी-नरेश्वर-राजा मंडप-माहि आविउ छइ रांणी-सहित । त्रिण्णइ [३ख] कुमरि प्रतीहारी-सहित आवी छइं । ते कुमरि-ना सत्य-नइ तेजि करी राज-कुमर-नां तेज आछां कियां । त्रिंण्णि-इ कुमरि त्रिहुं-ने हाथे वर-माला । मंडप माल्हती माल्हती प्रतीहारी मुहरं थिकी वर-तणां व्रंणन करी वर दिखालइ छइ ।

छत्रीस लाख कनोज-देस-नु सांमी कनोज-राय-नु कुमर कर्ण । गमइ ? न गमइ । वली आघेरडी चाली प्रतीहारी । आ सात-लक्ष कर्णाट-देश-तणु स्वामी विपुलराजा तेह-नु कुमर जइतमाल । गमइ ? अत ना । वली आघेरडी चाली प्रतीहारी । आ नव-लक्ष कूंकण-देश-तणु स्वामी बलिचंड राजा तेह-नु कुमर बलमित्र । गमइ ? अत ना । वली आ नव-सहस्र नवसारी-देस-तणु स्वामी राजा रूपसेन तेह-नु कुमर ससिवदन । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ साठ-सहस्र केकिंधा, तेह-नु स्वामी केतु राजा, तेह-नु कुमर सूर्यसेन । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ बत्रीस-लाख मरहट्ठ-नु स्वामी महीपाल राजा, तेह-नु कुमर प्रद्योतन । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ मालवा देस-नु स्वामी धरवीर राजा, तेह-नु कुमर प्रतापमल्ल । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ नव- सहस्र लाड देस-नु स्वामी लीलांगद राजा, तेह-नु कुमर चंद्रसेन । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ नव-सहस्र सुराष्ट्र देस, जेह-नु स्वांमी आनंददेव राजा, तेह-नु कुमर कर्णराज । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ पांचालदेस-नु स्वांमी पांचाल राजा, तेह-नु कुमर विद्युत्प्रभ गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ कच्छदेस-नु स्वामी कपोल (?) राजा, तेह-नु [कुमर] सुंदर । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ नव-लाख सिंधु देस-नु स्वामी राजा सवेर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नु कुमर दधिपूर्ण । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । आ मरु-देस-नु स्वांमी कृष्णदेव राजा-नु कुमर महीनाथ । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । अर्बुदाचलदेस-नु स्वामी प्रहराज राय-नु कुमर राजस्यंधा । गमइ ? अत ना । वली प्रती० । दस-सहस्र मेदपाट-नु स्वांमी सहस्रमल्ल-नु कुमर कलाकर्ण ! गमइ ? अत ना । वली प्रती० । सवालख-नु स्वांमी मल्लराज तेह-नु अखइराज कुमर गमइ ? अत ना । वली प्रती० । ऊंडडविहारदेस-नु स्वांमी गंगाधर राजा-नु कुमर गंगदत्त । गमइ ? अत ना ।

तिहां थिकी त्रिण्णइ चाली अनइ गांगेउ-नइ रथि आवी छइं । प्रतीहारी कहइ छइ, साठि लक्ष कुरूक्षेत्र देस, ए तेह-नु स्वांमी गांगेउ बोलीअइ, जांन्हवी गंगा-तणा उदर-नु ऊपनु, स्यांतन-राय-तणु पुत्र, सोभाग-सुंदर, असम साहसीक मल्ल । सहस्रकिरण सूर्य-नइ प्रतापि, सोल-कला-संपूर्ण जेह-नी किरणावली । शूरवीर पराक्रमी, स्यंघ-ने परिक्रमी । माता-पिता-नु भगत । गंगाजल-समान जेह-ना निर्मल गुण । वाचा-अविचल मर्यादा-मयरहर । सरणाई-चिडाय-पांजर । दांनि दलिद्रहर, जाचक-जन-कल्पतर । एकांग वर वीर । वीराधिवीर बिरिदा चतुर्दश विद्या-निधांन बत्रीस-लक्षणक । बहुत्तरि-कला-कुशल । कूर्चाल सरस्वती । गोत्र-गोवाल । बाल-ब्रह्मचारी । एह गांगेउ कुमर । जइ एह-ना पद-कमल प्रामीअइं तु मनोवांछित वर-तणी प्राप्ति हुइ ।

प्रतीहारी-ना ए बोल कहतां समी त्रिण्णइ कन्या ऊपाडी समकाल आपणइ रथि बइसारी । वली गांगेउ कहइ छइ, भईओ ! कहिसि अणकहिइं छल करी गिउ । हुं कही कहावी जाउं । जेह-ने खवे खाजि हुइ, ते आविज्यु । जेह-नइं पेट दूखतुं हुइ, ते आविजिउ । इस्या बोल कही गांगेइ हाथि धनुष लीधु । धोंकार नींपजाविउ । तिवारं घणा कुमर पुलायन करिवा लागा । नासता एकि अडवडी पडइं छइं । हाथ-पग अलगा हुइं छइं । जिम केसरी स्यंध-नइ नादि गजेंद्र गडडी पडइ ते परि सयंवर-मंडप-माहि हुवा लागी छइ । चालिउ गांगेउ हस्तिनागपुर-भणी । तीह-माहि जे महा शूरवीर हता ते परस्परिइं कहिवा लागा । आपणपइं जीवताइ आ एकाकी मात्र त्रिण्णिइ कन्या लेई चालिउ । वली कही कहावी-नइ । ति वार लाख राजकुमार ऊ(४ क)ठिया । आपणे आपणे परिवार-सहित गांगेउ-ना रथ-भणी आवीआ । ... गलइं वलिया रथ चउ केर वींटिउ । बांण-नी धर धोरणि चलावी । पणि गांगेउ-लगइ एकइ न जाई । पणि तुहइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गांगेउ-नइ मनि दया-नु परिणांम । ति वार गांगेइ बांण मेल्हिउं ।

चउपई

जव गांगेइ परठिउं बाण अमर-लोक छांडइ सुर-ठांण
मणुअ बापडा कहि कुण मात्र विण-लागा मोडाविया गात्र
मेल्हिउं क्षिप्र बांण गांगेवि वेणी-डंड गया सवि खेवि
कहि-नां नाक गयां कहि कांन नासइं भड मेल्हि सवि मांम
कासीपति बोलाविउ राउ कहि तूअ करउं किसु हिव ठाउ
अम्ह कूं कुंत्री नही मोकली हव जे तउ सिख्या दिउं .... ली १३०
कासीपति लागु तु पाइ कर जोडी वींनती कराइ
ए त्रिण्णइ कंन्या तुम्हि वरु जं जं जाणु तं तं करु
चालु हुं साथिइं आवेसु तिहा आवी वीवाह करेसु
आपिसु सवि मयगल तोखार अरथ गरथ कोठार भंडार
गांगेउ-साथिइं थिउ राउ लीधा अपर सवे समुदाउ
गयपुरि पाटणि उत्सव-रंग वरतिउ वडउ महोत्सव-रंग
विचित्रवीर्य परणाविउ राउ पणि ते गांगेउ-नु पसाउ
मनह तणा मनोरथ सवइ पंच विषय सुहभर भोगवइ
विषय-सुखि लागु राजिंद अनि कांई तेह जि आणंद
राज-तणी कय न करइ सार पायक परिघु गय तोखार १३५
वीसारी माय-तणी भगति गुरु-देव-नी न जांणइ जुगति
गांगेउ मन-माहि न धरइ धरम नींम कांई नवि करइ
दिणि दिणि रमणि-सरिस घण नेह छुडि राउ दुर्बलउ देह
श्रवण अंखि नासा हुई हीण वचन-कला सघली थई क्षीण
तं जांणी जंपइ गांगेउ सांभलि बांधव साचु भेउ
विषय-सुखि लागु एकंत देखि देह-नु आविउ अंत
धर्म अर्थ शिव-सुख-नुं ठांम त्रिहुं-तणुं तइं फेडिउं ठांम
एक कामि लागु मन रंगि जाइसि मरी नींमिसहि भग्गि
सत्यवती दीधु उपदेस लाजिउ मनि कांई लवलेस
गांगेउ-ने लागु पाइ च्यारइ बोल पतगरिया राइ १४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[धृतराष्ट्र-पांडु-विदुर-जन्म]

जायउ अंबादेविहि पुत्र — दीउ नाम धृतराष्ट्र निरुत्त
कांई इक पुव्व-कंम-वीनांणि — जनम-लगइ जायंध सु जांणि
जि(?ज)णिउ अंबिका वली सुपुत्र — धुर-लग पांडु-रोगि संजुत्त
पांडु नाम दीधुं तेह-नइं — पांडु-रोग धुर-लग जेह-नइं
अंबालिका जि(?ज)णिउ सुत तेणि — जाणीतु रांणे राएणि
विदुर नाम दीधुं सुअ तास — विद्या-कला-सरिस अभ्यास
पंच पंच वउलियां जइ वरस — गांगेउ बइठउ त्रिहुं सरिस
कांई इक पुव्व-नेह-इ(?अ)हिनांणि — विद्या कला... भणावइ तांणि
सकल-कला-ना हूआ सुजांण — पोढा थिया प्राक्रंम-परांण
विचित्रवीर्य वीसरिउ उपदेस — करइ पुंण्य नवि कय लवलेस १४५
वली कांम सेवइ अत्यंत — दिणि दिणि देह झुडी गई अंतिं
खयन-रोग लागु जस अंगि — विवनु राउ विलासि अणंगि
मृत्यु-काज कीधां गांगेइ — बोलाविउ धृतराष्ट्र गुणेइ
वडु कुमर तुं वडु गुणे उ — बइसि पाटि बोलइ गांगेउ
धृतराष्ट्र भणि संभलि ताउ — मझ राज्य-नु नहीं ए न्याउ
हुं जाचंध कहिउ धृतराष्ट्र — पांडु-कुमर बइसारु पाटि
पांडु-कुमर-रहइं दीधुं राज — जांणे गांगेउ युवराज
क्रमि क्रमि पांडु हुउ वृधिवंत — तपइ राजि जिमि कमलिणि-कंत १४९

(धृतराष्ट्र-विवाह)

(बोली)

जे विचित्रवीर्य-ना कुमार धृतराष्ट्र, पांडु अनइ विदुर, तीहना पांणिग्रहण-चिंता गांगेउ-नइ मनि अपार हूई छइ ।

चिंता करु म चींतवु, अवर कु चिंतइ कांइं ।
क्षीर पयोहरि जिणि ठविउ, बालक उदरि ठियाइ ॥

गांधार-देस, सबल राजा, तेह-नइ शकुनि बेटु । गांधारी-प्रमुख आठ बेटी, पणि आठइ अपछरा-समांना । केतलेई एके दिहाडे ते सबल-राजा दिवंगत हुउ । शकुनि राजि बइठु । पणि जे आठ बहिन छइं, तीह-ना विवाह-तणी चिंता घणी । एक राज-चिंता । बीजी आठ बहिन-ना विवाह-नी चिंता । तिणि करी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा शकुनि व्यग्र-चित्त दिहाडइ दिहाडइ दूबलु थाइ ।

बिंदुनाऽप्यधिका चिंता चिचा, थाइ (?) भवेत् तु मे मतिः ।
चिता दहति निर्जीवं, चिंता जीव-समन्वितम् ॥

एकदा प्रस्तावि राजा शकुनि निद्रां पुढइ छइ, सिपुनांतर-माहि सिउं देखिवा लागु छइ । देवि-एक देखइ, दीदीप्यमान देह, चलत कुंडल आभरण (४ख), देव-दुक्खित(?ष्य) वस्त्र । जिसिउ कांई तेज-नु पुंज हुइ । रूप सौभाग्य लावंन्य-नी धणीयांणी जाणइ हुंति । (ति)णि जागविउ । राइ पगे लागी प्रणांम कीधु । मात, तम्हे कुंण । कहीउ । हुं तम्हारी कुलवति(? देवता) । तुं चिंतावन्त जांणी करी हुं तुझ रहइं कहिवा आवी । ए कुमरि-नइं वर-तणी चिंता म करिसि । ईहरइं एक-इ-जि वर सिरजिउ छइ । शकुनि वली पूछइ छइ । मात, कहु-न ते कुंण । देवि कहइ छइ, सांभलि । हस्तिनागपुर पत्तन तिहां गांगेउ कुमर स्यांतन राय-नु बेटु जयवंतु वर्तइ, तैलोक्य -नमस्करणीय, बाल-ब्रह्मचारी, शूरवीर पराक्रमी । तेह-नु लघु भ्राता विचित्रवीर्य राजा दिवंगत हूउ । तेह-ना त्रिण्णि पुत्र छइं, धृतराष्ट्र, पांडु अनइ विदुर । जे धृतराष्ट्र छइ, जे जन्म-जाचंध छइ, पणि भाग्य-नु धणी छइ । ताहरी आठ-इ बहिनहं रइं विधात्रां तेह-इ-जि वर सिरिजिउ छइ । ए वात साचीअ-इ-जि । पणि जांणे तेह-थिका तझ-रइं सखाईआ घणा हुसिइं ।

एतली वात कही-नइ देवी जिम वीज-नु झात्कार हुइ तिम जातीअइ थाकी । शकुनि जागिउ, जिहां देवि आवी हती तिहां पारिजातक-नां पुष्प-नु प्रकर देखइ । ति वारं सिपुनांतर-नी वार्ता साचीअ-इ-जि जांणी । राइ विमासण कीधीअ-इ-जि नही । चतुरंगी सेना द्रव्य-नी कोडि, अनेकि समुदाउ, आठइ कंन्या गांधारी-प्रमुख प्रधांन पुरुष-रहइं राजा चलावी अनइ हस्तिनाग-पुर-भणी चालिउ । आगलि थिका भट्टमात्र मोकलिया छइं । तेहे गांगेउ जणाविउ । ते वात जांणी गांगेउ सुहर्षित हूउ । भटमात्र-रहइं घणुं दांन दीधुं । मोटइ विस्तारि गांगेउ सांम्हु चालिउ छइ । राजा गांगेउ आवतु देखी शकुनि रेवंत-थिकु ऊतरिउ गांगेउ-ने पगे लागु । विवाह-नी वात जणावी । मोटइ महोच्छवि धृतराष्ट्र आठ कुमरि-तणां पाणिग्रहण करविउ । शकुनि आपणि राजि पुहुतु ।

(पांडु-विवाह)

वली गांगेउ पांडव-कुमर-ना विवाह-नी घणी चिंता करइ । इसिइ प्रस्तावि कुणहिइं एकं देसंतरी आगइ गांगेउ यादवेंद्र-नी वात जणाविउ छइ । हवुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूंती-नी वात चलावीअइ छइ ।

(चउपई)

गंगा नइ जमणा बिहुं विचालि मथुरा-नयर वसइ सुविसाल
यदुराजा-नु मोटु वंस जांणे सहसकिर(ण) अवतंस १५०
तेणि वंसि अवतरीउ सूर अणह-ततु(?) आगर भर-पूर
कथा एक बोलिसु लवलेस विस्तारि पणि बोली न सकेसु
शौरि-नांमि सोरीपुर नयर जांणे किर अमरापुर पवर
शौरिराय-नइ बेटा घणा नांम न जांणुं सविहुं तणां
शौरिराउ पुहुतु पर-लोकि अंधगविष्णु ठवि राजि लोकि
मथुरां राजा भोजगविष्णु राजि तपइ जिम सहसकिरण
अंधगविष्णु-तणा दस पुत्र प्रतापीक नइ सवि सुचरित्र
दस दसार ते भणीअइं लोइ सूरवीर-पण पार न कोइ
वडा-कुमर समुद्रविजइ नांम नांम-पहइ अधिकुं परिणांम १५५
धरण पूरण लहुडु वसुदेव जेह-ना गुण जांणइं सवि देव
भोजगविष्णु-तणइ उग्रसेणि जगि जांणीअइ राइ-रांणेणि
अंधगविष्णु-तणइ दीकिरी जाई तिसी न सुरसुंदरी
अति उत्सव हूआ पुर-ठाइ एक जीभ ते मइं न कहाइ
जोसी दीधुं कूंती नांम कूंती जांणे रूप-निधांन
पोढी थई लेसालं जाइ सकल कला आपी उवझाइ
जोअण-वेस पुहुत्ती किमइ राजा चिंतातुर थिउ तिमइ
चर पाठवीआ देसि विदेसि वर जोआवइ कूंती-रेसि
राजा अतिहि मणिहिं टलवलइ कूंती-जोगि न वर को मिलइ १६०

(बोली)

राइ अंधगविष्णि वडु बेटु समुद्रविजइ तेडिउ छइ जे महा-गुणे करी गंभीर, शूरवीर, पराक्रमी । सांभलि वत्स, कौंती महा-सरूप कंन्या । वली गुणे करी विशिष्ट । एह-ना मन-गमतु अभीष्ट वर न मिलइ । प्रच्छंन्न-चित्तिइ मझ-रइं घणा दिन हूआ जोआवता । ति वार समुद्रविजइ कहिउं-आंम तात, ए कौंती-नुं रूप पट्टि लिखावीअइ । को-एक आपणु चकोर पुरुष लेईनइ (५क) प्रिथ्वी-मंडल-माहि मोकलीअइ । जे अनुरूप वर दीसइ, मोटा कुल-नु मोटा वंश-नु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेह-नइं दीजइ ।

ति वारं मोटु एक पट्ट कराविउ । पणि महा विशिष्ट वली कलावंत चित्रकर एक तेडाविउ । कौंती-ना रूप-नी चित्रामि चीतरिवा-नी वात जणावी । ति वारं चित्रकि कहिउं - महाराज, कौंती-ना रूप-नु लवकेश एक सिउं कुणहिइं चीत्राइ छइ, जइ वृहस्पति आवइ तुहइ ? पणि तुहइ तम्हारइं आदेशि करी जिसिउं जाणिसु तिसिउ पट्ट नीपाइसु ।'

'तु नींपाई' ।

(चउपई)

आंण्या हींगलोअ हरीआल पंच-वर्ण वानां सुविसाल
रस कीजइ तिहां एकि रूपमइ वली नींपना एकि कनकमइ
कौंती भणइ रूपि अहिमांणि सकल शरीर देह-परमांणि
लिखिउं रूप सरसइ-आधारि जिसी अवर नारि न संसारि
कोरक-नामि पाठविउ दूत विद्या-कला जि गुण-संजुत्त
अंतर-गति आपिया अविभेउ चालिउ कोरक ते पट लेउ
पूरव पंथ फिरिउ नेपाल अंग बंग नइ तिलंग डाहाल
मरहठ सोरठ सहि नंमीआड गूजर मरु मालव मेवाड
कौंती जोगि नही कइ भूप सूरवीरपण गुणि अनुरूप
कुणहिइ एक नैमित्ति विसेसि कोरक वही गयउ कुरुदेसि १६५
गयपुरि पाटणि गयु सुजांण राजपाटि कां रांणोरांणि
गांगेउ सहि पिक्खीअ पांडु अनुपम रूप अनइ बलवंड
दीठउ विदुर अनइ धृतराष्ट्र अपर राय-सुअ सइं साताठ
जिसिउ पांडु गुणि रूपिहि होइ तिसिउ अवर नवि दीसइ कोइ
नव-जोवण नव-नेह-गुणेणि कोरक-नुं मन बइठुं तेणि
वात जणाविउ तिणि गांगेउ पट्ट दाखि भाखिया सवि भेउ
गांगेउ तिणि बइठुं मंत्र पांडु-कुमर-रहइं कहि उववंत्र
मइं ए दीठुं रूप मझ गमइ जइ ताहरुं चित्त इणि रमइ
कुमर न बोलिउ कंन्या गमी ऊठिउ गांगेउ-पय नमी
कोरकि पांडि करी अवलि वात मेलि विवाह म करिजे चात्र १७०
कोरक-साथि जे जण जांण कंन्या जोई करे प्रमांण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोइ मोकलिउ सोरीपुर-भणी वार म लाइसि कहीअइ घणी
ते बेई सोरीपुरि गया अंधगविष्णु-राउ भेटीआ
दस दसार-सहि कही सु वात पांडु प्रतिइं कूंती दिउ रात
कूंती राउ अछइ उत्संगि पांडु वान सवि गुणि मन-रंगि
तु कूंती समरइ किरतार मझ इणि जनमि पांडु भरतार
ते बेइ मोकलिया अवासि भोजन-भगति हूई सुविलासि
जादव-राइ कही मन-वात म करु एह विवाह-नी वात
ए वर कूंती सिउ संजोग जनम-लगी एह-नइं पांडु-रोग
पांडु नांम लाधुं गुणि तेणि आगइ वात कही मझ केणि १७५
सूत मोकलिउ पाछु राइ हवडां अछइ विमासण कांइ
पणि तोई कूंती-रहइं मिलिउ मिली करी नइ पाछउ वलिउ
कूंती वर जांणिउ ते सार पांडु टलत न करुं भरतार
धात्री वात जणावी एह तिणि आशासन दीधी तेह
गांगेउ-नु चर गिउ तिहां हस्तिनागपुर पाटण जिहां
वेगिहि मिलिउ जई गांगेउ तिहां-तणु सहू कहिउ भेउ १७८

(बोली)

चर कहइ छइ-सांभली, पइला मोटा राजाधिराज । पणि तुहइ आपणु वस वखांणिउ । कुल वखांणिउं । वली तेहे कहिउं - जीह-नइ पूर्विज श्रीशांतिनाथ-प्रभु, श्रीकुंथुनाथ, श्रीअरनाथ चक्रवर्ति धर्म-चक्रिवर्ति हुआ हुइं, ते घर, ते वर किणि मागिउं, किणि लाधुं ? पणि तांहि वडां विमासण छइ । वली सरूप कहावीअइ छइ ।

(चउपई)

नवि किन्नरी न कइ चितरी एही नही अमर-सुंदरी
इसी नारि अवर न सुणि भूप कूंती-तणुं अनुपम रूप (५ख)
कहइ पांडु तेह-नुं मन किसिउंजइ जांणइ तु कहि छइ जिसिउं
बे कर जोडी ते चर भणइ कूंती कलत्र हुसिइ तम्ह-तणइ १८०
खरीअ वात ए सवि जांणउ मझ-आगलि भागु तिणि भेउ
सांभलि माहरी वाचा सार पांडु टलत न करु भरतार
इणि वातं मनि हरखिउ भूप जांणिउं कूंती-तणउं सरूप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पांडु-कुमरि नवि लाई वार दीधु तास लक्ष दीनार
पणि तोई मनि अति असमाधि जांणे अंगि विलागी आधि
किणि दिणि कूंती परणिसु कहइ तनु पलंगि निशि-भरि नवि रहइ
भोजनि रसि मनु मांनइ नही वावि सरोवरि न रमइ रही
सुरभि सुगंधि न मनु वीसमइ नदी-तडां-तडि जई नवि रमइ

(पांडु वडे विद्याधरनी मुक्ति)

एक दिवस पल्लांणि पवंग बाहिरि वणि जावा मन-रंग
वेगि वेगि गिउ वनि उद्यांनि तुरिय बंधि पसरिउ आरांमि १८५
दीठु खायर-थुडि एक पुरख करइ पुकारि देहि घण दुक्ख
जडिउ निवड खीले लोहमइ दीठु खांडु कुमरि तिणि समइ
ते देखी दुख थिउं भूपाल दिवस-माहि पुहचइ(इ)ह काल
जनमिया कांइं जिणिणि ते पुरख जे न सकइ भंजी पर-दुक्ख
समरिउ संतिनाह सिरि कुंथु समरिउ गांगेउ गुणवंत
माहरा मन-नुं चिंतिउ हुजिउ एह पुरख-नुं दुख भाजिउ
एक-मनु गिउ तस आसन्नु खीलु तांणिउ ते लोहमु
साहस-बलि सोइ नीकलि जाइ पडिउ पुरुख महि-मंडलि ठाइ
चेत-वेत नवि कांई तास अधिकु लेवा लागु सास
जांणिउं मरिसिइ दिउं नवकार वारुं चेत किमइ जइ लगार १९०
वाला-केरु करि वींजणु तींणि वाउ कीधु तस घणु
वलि नवकार-मंत्र-संकेत विसा सोल सिरि वालिउं चित
मुद्रा पांणि दिखाडी तेणि कर ऊतारी लइ राएणि
तस अभिखेकि नीरि छांटेइ गइअ पीड वेगिहि ऊठेइ
पांडु-कुमर-ने लागु पाइ विनय-वचन बोलइ तिणि ठाइ
कहि बांधव कुण दिउं अपमांन तइं मझ दीधुं जीवी-दांन
उपगारह कीजइ उपगार ए नवि कांइ वडु विचार
पणि तां तुं मनि अछइ सचिंत कहि मझ-आगलि भांजुं भ्रंति
मझ वैताढ्य वास-नु ठांम विशालाक्ष सुणि माहरुं नांम
वेसासी विद्याधरि लीउ इहं आंणी अपाइ पाडीउ १९५
पुव्व-सनेहि निसुणि बलवंत इणि वनि आविउ भमत भमंत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किहां वइताढ (किहां) ए रंन मझ तइं दीधुं जीवी-दांन

विरला जाणंति गुणा, विरला विरयंति ललिय-कव्वाइं ।
विरला पर-कज्ज-करा, पर-दुक्खे दुक्खिया विरला ॥

हिव आपणपा बिहुं सनेह जेहु मोर अनइ वलि मेह
एह नेह राखे हुए भंग अविचल प्रीति अनइ मन-रंग
तुं तो राउ वसुह-विख्यात मझ आगलि कहि मन-नी वात
जइ भांजी न सकुं संताप तु मझ कृतघन-केरु पाप

ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति भाषते ।
भुंजयते भुंक्ते चैव, षड्विधं प्रीति-लक्षणम् ॥ २००

(दोहा)

पांडु भणइ बांधव निसुणि कहीसु कूंती-वत्त
मझ यादव-वंश जा न दिइ तिणि हुं अछुं सचिंत
तं सुणि विद्याधर भणइ एह जि मुद्रा लेह
मनह मनोरथ पूरिसिइ मनि मां'णिसि संदेह
इणि विद्या छइ थंभणी वसीकरण इणि होइ
कज-सिद्धि अदृशीकरण अतुलाअ बल इणि जोइ
इणि करि थिकी सहू नमइ राउल रा राजिंद
जइ लवलेस सुकीअ हुइ संभलि पांडु नरिंद
आपुं अगास-गामिनी विद्या हुं तम्ह-रेसि
इणि मुद्रां अधिकी फुरइ हींडे देसि विदेसि २०५
विद्याधर मुकलावि गिउ वलि आपणइ सुवासि
मुद्रा पिहिरी राइ करि जोई वात विमासि

(पांडुनुं शौरीपुर-गमन)

(चउपई)

विद्या-बलि ऊपडिउ अगासि गिउ सोरीपुर-तणइ निवासि
रमलि-रेसि तिहां कूंती (६क) अछइ गयु पांडु तिणि वनखंडि पछइ
इसइ सूर आथमिउ सु जांणि नव-पल्लव लेवा अहिनांणि
धात्री गई माहि वन-खंड अदृश न देखइ कूंती पांडु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूंती धुरि जांणावी वात तुं तो धात्री माहरी मात
मझ वर पांडु नरेसर सरणि नहींतर कय संजय कय मरण
आंम-तात नवि देसिइ (तिहां) माहरु मन-चिंतित वर जिहां
धात्री कहइ स बुद्धि करेसु पांडु नरेसर वर तइं देसु २१०
सवि वात सुणइ छइ पांडु धात्री गई माहि वन-खंड
नव पल्लव लेवा वन-खंड कूंती रही कयल-गृहि मंडि
कूंती वली विमासी वात किहां गहिली नइ किहां सोमनाथ
किहां सोरीपुर किहां कुरुनाह तात मांड किम हुइ विवाह
डाभ-तणु तिणि कीधु दोर लांबु जाडु अतिहि अघोर
चडि असोकि गलि घाली पास परमेसर पूरे मझ आस
समरिउ महा-मंत्र नवकार हुजिउ पांडु मझ भवि भरतार
चडि असोक-तरु-केरी डालि बंधि दोर कूंती तिणि कालि
गलइ पास घालि सज थई नीचुं मेल्हिउ क्षणि नवि मूंई
पांडु-राइ खग्गिहि सिउं दोर मंत्र जपिउ नवकार अघोर २१५
कूंती पडी धरणि थई अचेत ले उत्संगिहि वालिउं चेत
जांणइ अपर पुरुष-नइ फुरिसि हव जीवीनइ किसिउं करेसु
घडीअ एक-दोइ चडीउ चंद कूंती पिक्खवि पांडु नरिंद
नामांकित कंकण बिहुं हाथि हरिखी हीअइ सुअक्षर वाचि
पांडु भणइ म गिणिसि मनि भ्रंति हुं ते पांडु नरिंदु कहंति
इम करतां धात्री तस माइ आवी तिणि कदली-गृहि ठाइ
दीठु पांडु ओलखिउ ति वार तां कूंती तूठु किरतार
वेगि वेगि गांधर्व-विवाह कीधु कूंती पांडु-सनाह
रहियां बेउ कदली-गृह-माहि रंगि रमंतां रयणि विहाइ
लाधुं कंत-तणुं अति मांन कुंता-देवि हूई साधांन २२०
रयणि गलंती चालिउ राउ तिहां गयु जिहां गयपुर-ठाउ
धात्री अनइं स कूंता-देवि संपुहुती घरि कुसले खेमि
कूंती-उदरि वाधइ संतांन तपइ कांति तस कंचन-वन्न
मनह-तणा डोहला विसाल दांन-तणी मति अबला बाल

(चालु)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org